समाचार समीक्षा

तंत्र का मूल आधार

'अंधेरे में कोई रस्सी सांप दिखती है। कुछ उसे देखकर भागते हैं, कुछ लड़ने की तैयारी करते हैं। दोनों ही भूल में हैं क्योंकि दोनों ही उसे स्वीकार कर लेते हैं..निकट आकर पता लगता है कि सांप है ही नहीं...केवल निकट भर जाना होता है। मनुष्य को अपने निकट भर जाना है।' क्रांतिबीज पुस्तक की इस कहानी को *3* मई के दैनिक जागरण, नई दिल्ली ने प्रकाशित किया। स्व-चित्त के प्रति सम्यक जागरण ही जीवन विजय का सूत्र है और यही कहानी का सार भी।

जहां सुख होता है, तो मैं नहीं होता। मैं होता हूं, तो सुख नहीं होता। इसकी क्षणभर को झलक मिलती है...जब यह झलक थिर हो जाती है, यह स्वभाव बन जाती है—उस घड़ी का नाम महासुख है। 'जहां सुख वहां मैं नहीं', *3* मई के लोकमत समाचार, नागपुर ने इस प्रवचन को छापा। 'मन चंचल है और मन की चंचलता बुरी बात है, लेकिन उतनी नहीं, जितनी हम समझते हैं। मन की चंचलता उसके जीवंत होने का प्रमाण है।' *5* मई के राजस्थान पत्रिका, जयपुर ने 'मन की चंचलता' प्रवचन प्रकाशित किया। ओशो कहते हैं कि मन इसलिए चंचल है क्योंकि हम उसको बैठने का स्थान नहीं दे सके। यदि उसको बैठने योग्य स्थान मिल जाये तो वह तत्क्षण बैठ जायेगा। 'प्रेम की शिक्षा दी जानी चाहिए...प्रेम की तरफ बच्चों को विकसित किया जाना चाहिए, क्योंकि वही उनके जीवन का आधार बनेगा।' ओशो के नये समाज में प्रेम का स्थान क्या है, इस वाक्य से ज्ञात हो जाता है। यह प्रवचन *6* मई के पंजाब केसरी, नई दिल्ली में छपा है।

बाउल लोग एक गीत गाते हैं—

कोई पारखी ही, रस मर्मज्ञ ही,
प्रेम की सुगंध उसके स्वाद
और प्रेमी के हृदय की भाषा को समझ सकता है।
दूसरे उसकी गंध,
उसका स्वाद क्या जाने?

दि बिलवेड पुस्तक का यह प्रवचन *9* मई के आज की जनता ने प्रकाशित किया। ओशो कहते हैं कि प्रेम तो एक हीरे की तरह है, जिसके कई पहलू, कई पक्ष हैं। और हर पहलू की चमक उसे और मूल्यवान बनाती है।

KHEL KHEL MEIN MAST

A meditation camp for children at Oshodham retreat makes play its focus, says **Shana Maria Verghis**. And parents put competition phobias behind them

'एंटर दि डार्कनेस' *10* मई के दि आफ्टरनून डिस्पैच एंड कूरियर, मुम्बई ने इसे प्रकाशित किया। गहन अंधकार में उतरने की विधि को बताते हुए ओशो कह रहे हैं कि चलते-फिरते, काम करते, बोलते, खाते कुछ भी करते वक्त अगर अंधकार का एक हिस्सा अपने भीतर रखो तो तुम्हारा शरीर अधिक विश्राममय और शांत रहेगा। राजस्थान पत्रिका ने अपने अंग्रेजी संस्करण में *10* मई को थॉट ऑफ दि डे में ओशो का प्रवचन प्रकाशित किया।

एशियन एज, नई दिल्ली ओशो की अनेक ध्यान विधियों को हर सप्ताह प्रकाशित कर रहा है। ये ऐसी विधियां हैं, जिन्हें आप कभी भी कर सकते हैं। *14* मई को छपी एक ऐसी ही विधि में ओशो कहते हैं कि किसी दिन राम और अल्लाह इत्यादि न बोलकर जब कभी तुम थके महसूस करो, स्वयं को पुकारो—'क्या तुम मौजूद हो?' किसी और के उत्तर की प्रतीक्षा मत करो। उस क्षण के लिए साक्षी हो जाओ, सचेत हो जाओ और उत्तर को स्वयं महसूस करो कि हां मैं यहां हूं।' *17* मई के हिन्दुस्तान टाइम्स, नई दिल्ली में स्वामी कीर्ति का लेख छपा है। 'विद नेचर, यू हैव टू बी रीयल' जे. कृष्णमूर्ति की कविता पर चर्चा करते हुए स्वामी कीर्ति ने लिखा है कि स्वयं को उपलब्ध व्यक्ति के लिए यह अद्‌भुत अभिव्यक्ति है। हमारा जीवन स्वयं, समाज और धर्म द्वारा पैदा किया गया कारावास है। ओशो कहते हैं कि जो व्यक्ति प्रकृति के समीप है वही वास्तविक है, क्योंकि प्रकृति के साथ ही आप वास्तविक होते हो।

'यह तंत्र का मूल आधार है। तुम उतर जाओ संसार में—पूरे भाव से, समग्र भाव से, सब छोड़कर...और तुम

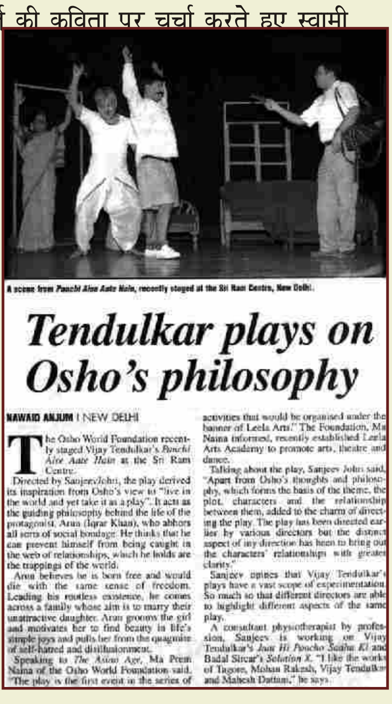
A scene from *Panchi Aise Aate Hain*, recently staged at the Sri Ram Centre, New Delhi.

Tendulkar plays on Osho's philosophy

NAWAID ANJUM | NEW DELHI

The Osho World Foundation recently staged Vijay Tendulkar's *Panchi Aise Aate Hain* at the Sri Ram Centre.

Directed by Sanjeev Johri, the play derived its inspiration from Osho's view to "live in the world and yet take it as a play". It acts as the guiding philosophy behind the life of the protagonist, Arun (Iqrar Khan), who abhors all sorts of social bondage. He thinks that he can prevent himself from being caught in the web of relationships, which he holds are the trappings of the world.

Arun believes he is born free and would die with the same sense of freedom. Leading his rootless existence, he comes across a family whose aim is to marry their unattractive daughter. Arun grooms the girl and motivates her to find beauty in life's simple joys and pulls her from the quagmire of self-hatred and disillusionment.

Speaking to *The Asian Age*, Ma Prem Naina of the Osho World Foundation said, "The play is the first event in the series of activities that would be organised under the banner of Leela Arts." The Foundation, Ma Naina informed, recently established Leela Arts Academy to promote arts, theatre and dance.

Talking about the play, Sanjeev Johri said, "Apart from Osho's thoughts and philosophy, which forms the basis of the theme, the plot, characters and the relationship between them, added to the charm of directing the play. The play has been directed earlier by various directors but the distinct aspect of my direction has been to bring out the characters' relationships with greater clarity."

Sanjeev opines that Vijay Tendulkar's plays have a vast scope of experimentation. So much so that different directors are able to highlight different aspects of the same play.

A consultant physiotherapist by profession, Sanjeev is working on Vijay Tendulkar's *Jaat Hi Poocho Sadhu Ki* and Badal Sircar's *Solution X*. "I like the works of Tagore, Mohan Rakesh, Vijay Tendulkar and Mahesh Dattani," he says.

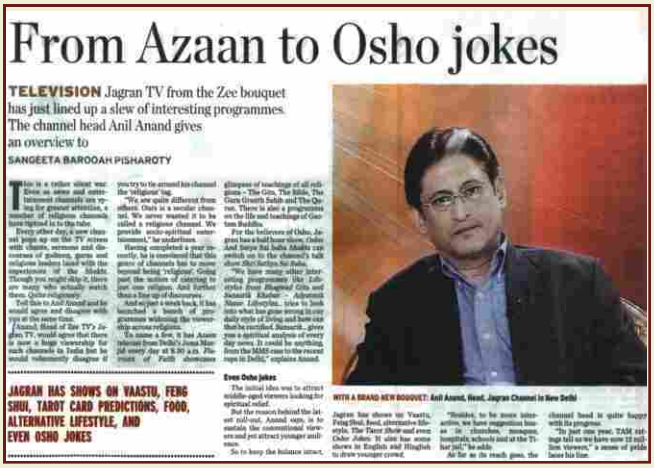
From Azaan to Osho jokes

TELEVISION Jagran TV from the Zee bouquet has just lined up a slew of interesting programmes. The channel head Anil Anand gives an overview to

SANGEETA BAROOAH PISHAROTY

JAGRAN HAS SHOWS ON VAASTU, FENG SHUI, TAROT CARD PREDICTIONS, FOOD, ALTERNATIVE LIFESTYLE, AND EVEN OSHO JOKES

WITH A BRAND NEW BOUQUET: Anil Anand, Head, Jagran Channel in New Delhi

अचानक एक दिन पाओगे कि तुमने तो नीचे जाने के लिए समर्पण किया था, तुम ऊपर जाने लगे।' अजहूं चेत गंवार पुस्तक का यह प्रवचन *17* मई के दैनिक जागरण, कानपुर में छापा। 'सत्य केवल एक है और वह यह कि मैं स्वयं के अतिरिक्त इस जगत में और कुछ भी नहीं पा सकता हूं। हां, पाने की कोशिश कर सकता हूं। पाने का श्रम कर सकता हूं, पाने के स्वप्न देख सकता हूं'—*18* मई के दैनिक भास्कर, चंडीगढ़ में ओशो का यह प्रवचन प्रकाशित हुआ।

वह रात जब सिद्धार्थ बुद्ध हुए

बुद्ध पूर्णिमा पर विशेष

'भीड़ भरे शॉपिंग मॉल के बीच साफ शीशे के दरवाजों से ओशो वर्ल्ड गैलेरिया में जैसे ही कदम रखते हैं, प्रेम जोशुआ के सितार की मीठी धुनें आपके तन-मन को राहत देती हैं' कॉलिन फर्नांडीस का यह लेख इंडिया टुडे, नई दिल्ली में प्रकाशित हुआ है। लेख में श्री फर्नांडीस अपने अनुभवों को आगे परोसते हुए लिखते हैं कि यहां की सभी कलाकृतियों में एक बात सामान्य है, हरेक में ओशो का कोई-न-कोई संदेश निहित है। 'भारतीय शास्त्रीय संगीत जीवित है, जिसमें हर वक्त देने के लिए कुछ नयापन मौजूद है'—प्रेम जोशुआ के इन भावों को सहारा टाइम्स, नई दिल्ली ने प्रकाशित किया। संजय ऑस्ता लिखते हैं कि जोशुआ इस बात से चिंतित नहीं हैं कि आज की पीढ़ी शास्त्रीय परंपराओं में रुचि नहीं रखती। बल्कि वह इस बात पर खुश हैं कि भारतीय संगीत जिस ढंग से आज पश्चिम में फैल रहा है, वैसा पहले कभी नहीं फैला।

'ध्यान की तथा ओशो पुस्तकें यहां रहने वालों में खासी लोकप्रिय हैं।' यह कहना है तिहाड़ जेल के लाइब्रेरियन श्री ई. नारायणन का। पुस्तकों के साथ-साथ ओशो की ध्यान विधियां भी यहां रहने वालों में व्यापक रूप से प्रसिद्ध हैं। *6* मई के एशियन एज ने इस खबर का खुलासा किया। 'व्यक्ति एक यूनिट है। जब उसमें स्पष्टता आती है तब उसमें आनंद, ध्यान व संगीत खिलता है और तब उससे सृजन घटित होता है'—नई टिहरी में बहुउद्देशीय सेवा केंद्र का उद्घाटन करते हुए स्वामी कीर्ति ने यह संदेश दिया। इस खबर को *9* मई के शाह टाइम्स ने प्रकाशित किया। अमर उजाला ने लिखा है— स्वामी चैतन्य कीर्ति ने आज यहां कहा कि ध्यान के बिना सृजन संभव नहीं है।'

गत मई माह में *23* और *24* तारीख को ओशो वर्ल्ड फाउंडेशन ने पहली बार लीला फाउंडेशन के तहत एक नाटक का आयोजन नई दिल्ली के श्रीराम सेंटर, मंडी हाउस में किया। 'पंछी ऐसे आते हैं'—श्री विजय तेंदुलकर द्वारा रचित और डॉ. संजीव जौहरी के कुशल निर्देशन के अंतर्गत यह नाटक सामाजिक तानों-बानों में गुंथा-मथा था। लड़की के विवाह को लेकर एक परिवार में किस तरह की परिस्थितियां उत्पन्न होती हैं, इसका एक बेहद रोचक चित्रण प्रस्तुत किया गया। दि हिन्दु, हिन्दुस्तान टाइम्स और एशियन ऐज सहित कई अन्य समाचार पत्रों ने इस खबर को प्रमुखता से छापा।

मन की चंचलता

प्रवचन

दिव्य हिमाचल, हरि भूमि, आज की जनता, मंथन, रांची एक्सप्रेस आदि कितने ही समाचार पत्र हैं, जो ओशो संदेश के प्रचार-प्रसार में जुटे हुए हैं, किंतु सीमित स्थान के कारण जिनका जिक्र संभव नहीं हो सका। मुझे याद है, कभी किसी समय ओशो के संदेशों को गिने-चुने अखबार ही प्रकाशित करते थे और आज देश के कोने-कोने में अनेक समाचार पत्र और पत्रिकाओं में आप ओशो के प्रवचनों को पढ़ सकते हैं। जागरण और साधना चैनलों पर नियमित रूप से ओशो प्रवचनों को सुने जा रहे हैं।

आप भी संदेशों को फैलाकर इस आनंद में सम्मिलित हों। आखिर ओशो का कार्य ही तो हमारा आनंद है।

— स्वामी प्रेम अभिनंदन